बासुकीनाथ झा

जन्म	–	10 जुलाई 1940
जन्म स्थान	–	ग्राम+पोस्ट–पटसा, जिला–समस्तीपुर
शिक्षा	–	एम०ए०,पी०–एच०डी०
वृत्ति	–	सन् 1963सँ व्याख्याता, दुमका (झारखंड), सन् 1964सँ 1965, रोसड़ा कालेज, रोसड़ा, सन् 1965सँ कालेज ऑफ कामर्स पटना, रीडर–1980सँ 1896 ई0, वि0वि0 प्रोफेसर–1986सँ 1988 ई0, विश्व विद्यालय सेवा आयोग द्वारा मगध विश्वविद्यालयमे प्रधानाचार्य नियुक्त–सन् 1988 ई0, प्रधानाचार्य पदसँ सेवा निवृत्त सन्–2000 ई0।
कृति	–	1. विद्यापति काव्यालोचन (शास्त्रीय समालोचना) अनुशीलन अवबोध (शोध एवं ऐतिहासिक समायोजन) परिवह–(आधुनिक समालोचना) लगभग 20 पुस्तकक सम्पादन, मैथिली त्रैमासिक पत्रिका घर–बाहरक सम्पादन सन् 2004सँ।
पुरस्कार	–	बिहार सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा सन् 1988 मे ग्रियर्सन पुरस्कार।
सम्मान	–	मिथिला विभूति सम्मान (विद्यापति सेवा संस्थान–दरभंगा), ताम्र पत्र सम्मान (चेतना समिति, पटना), रमानाथ झा सम्मान (साहित्यकार संसद) आदि, प्रसिद्ध शिक्षाविद्, चर्चित समाजिक कार्यकर्ता।

□□□

मिथिलाक प्राचीनता : वर्तमान अस्मिता

भारतीय उप-महाद्वीपमे अति प्राचीन कालसँ मिथिलाक अस्तित्व विद्यमान रहल अछि-सर्वस्वीकृत एवं उल्लेख्य रहल अछि। समय-समय पर यद्यपि अनेक नामे ख्यात होइत रहल अछि तथापि राजनीतिक दुष्चक्रक पश्चातो अद्यावधि अपन विद्यमानता स्थापित कएने अछि। ज्ञान-उपासना ओ चिन्तनक परम्परामे जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, गंगेश, मण्डन, वाचस्पति, उदयन आदि द्वारा विद्या ओ जीवनक गूढ़ रहस्यकेँ जनजन तक पहुँचाओल जाइत रहल। भारतीय दर्शनक भंडारकेँ भरबामे प्रचुर योगदान करैत रहल अछि। एहि प्रकारेँ पक्षधर, गोवर्द्धन, ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, गोविन्द दास, उमापति, लोचन, मनबोध, चन्दा झा, यात्री, मधुप, सुमन, लोकनिक काव्य सर्जना ओ विविध प्रकारक रचना होइत रहल अछि। एतबे नहि, लोरिक, दुलरा दयाल, दीनाभद्री, नैका-बनिजारा, सलहेस आदि लोकनायक पराक्रम ओ लोकभावनाक समादर सर्वत्र विद्यमान अछि।

प्राचीनताक दृष्टिसँ वैदिक युगमे सेहो मिथिलाक विद्यमानता दृष्टिगोचर होइत अछि। ऋग्वेदक मंत्र किंवा ऋचादिमे हो वा नहि उपनिषद ओ पुराणमे तँ अनेक स्थल पर एकर स्पष्ट उल्लेख भेटैत अछि। वृहद् विष्णुपुराणमे तँ एकर बारह नामक गौरवबोधक उल्लेख अछि।

एहि पुराणमे तँ पृथक रूपसँ मिथिला खण्डक अध्याय बनाओल गेल अछि जाहिमे निमि, मिथि आ मिथिला शब्दक उत्पति कथाक विस्तृत विवरण अछि। एहि सँ मिथिलाक प्राचीनता ओ स्वीकार्यता, विशेषता एवं महत्ता स्वयंसिद्ध अछि। एहूमे एहि ठामक लोकक ज्ञानशील होएब, दयालुता ओ उदारताक हेतु स्थानकेँ कृपापीठ, मंगलकारी, आकर्षक आदि विशेषणसँ युक्त कहब तत्कालीन आर्य समाजमे एकर श्रेष्ठत्व सिद्ध करैत अछि। मिथिला, तीरभुक्ति, वैदेह, नैमिकानन, सहित अन्य नाम भौगोलिक, क्षेत्रीय, माटिक वैशिष्ट्य, प्राकृतिक सौन्दर्य, आध्यात्मिक व्यवहार आदिक द्योतन करैत अछि। एहि बारहोमे सँ विदेह, तीरभुक्ति एवं मिथिला विशेष प्रसिद्ध अछि। एकर सभक आधारो पौराणिके अछि। 'वैदेह' नामक प्रसंग तत्कालीन परम्पराक अनुसार राजाक गोत्र नामक आधार पर जनक नाम 'विदेह' भए गेल-'विदेहानां जनपदो वैदेह:'। एकर उल्लेख वेदमे सेहो भेल अछि।

तिरहुत-ई शब्द तीरभुक्ति शब्दक तद्भव रूप थिक। एहि संबंधमे मिथिलामे एक श्लोक प्रचलित अछि-

जाता सा यत्र सीता सरिदमलजला वाग्वती यत्र पुण्या
यत्रास्ते सन्निधाने सुरनगर नदी भैरवोयत्र लिङ्गम्।
भोमांसा न्याय वेदाध्ययन पटुतरै: पण्डितैर्मण्डिता या
भूदेवोयत्र भूप यजन वसुमती सास्ति मे तीरभुक्ति:।।

नदी, तपोवन, काननसँ युक्त अर्थात् भरल रहबाक कारणेँ तीरभुक्ति; कौशिकी, गंगा एवं कोशी सीमा रहलासँ तीरभुक्ति; तीनू वेदसँ आहूति देनिहार ब्रह्मज्ञानी सभक निवास स्थान रहलासँ 'त्रिराहुति' अर्थात् तीरभुक्ति।

इतिहासकार लोकनिक मतेँ गुप्तकालमे मिथिला तीरभुक्ति नामे प्रसिद्ध छल एहिसँ पूर्व विदेह ओ मिथिला नामसँ। एतबे नहि, देवी भागवतमे सेहो मैथिल ओ मिथिलाक चर्चा अछि-

एतेवै मैथिला प्रोक्ता आत्मविद्या विशारदा:

योगेश्वर प्रसादेन द्वन्द्वैक्त्वाभि जायते।

एहूमे एहिठाम लोककेँ आत्मविद्या विशारद कहल गेल अछि। हँ, 'तीरभुक्ति'क प्रसंग ध्यातव्य जे गुप्त शासनकालमे 'भुक्ति' शब्द प्रान्त अथवा प्रशासनिक प्रक्षेत्रक सूचक छल एवं 'तीर' नदीतटक बोधक छल जे भौगोलिक स्थितिक सूचक थिक।

वैदिक कालेसँ स्वतंत्र सत्ताक रूपमे प्रतिष्ठित 'विदेह' ओ लिच्छवि-बज्जिसंघकेँ गुप्त साम्राज्य अपनामे आत्मसात् कए लेलक। नवीन नामकरण कयलक 'तीरभुक्ति' जकर उल्लेख पुरुषोत्तमदेव अपन कृति 'त्रिकाण्डशेष' मे कयलनि अछि। 'त्रिकाण्डशेष' ओ प्रदेश मानल गेल अछि जे तीन प्रसिद्ध नदी गंगा, गंडकी आ कोशीक तट पर पसरल अछि। तीरभुक्तिक महिमा वर्णन एहि प्रकारेँ भेल अछि-

मीमांसा न्याय वेदाध्ययन पटुतरै: पण्डितैर्मंडिताया।

भूदेवो यत्र भूपो यजन वसुमती सास्तिमे तीरभुक्ति:।।

मिथिलाक ऐतिहासिक वैशिष्ट्यक वर्णन करैत-स्टीवेंसन मूर कहने छथि-The history of Mithila does not centre round violent feats of arms but round courts engrossed in the luxurious enjoyment of literature and learning. But while Mithilas fame does not rest on heroic deeds, it must be duly honoured as the house where the enlighted and learned might always find a generous partron, peace and safety.

प्राचीनतम प्रमाण सभसँ पुष्ट होइत अछि जे मिथिला दीर्घकाल धरि वैदिक ओ उपनिषद विद्याक केन्द्र छल। राजा सभक दरबारमे तँ ज्ञानक ज्योति जरितहिँ छल, समाजक निम्नो वर्गमे लोक उच्च श्रेणीक विचारक ओ ज्ञानी होइत छल। उदाहरणार्थ महाभारतक वन पर्वमे मिथिलाक धर्मव्याधक तथा पतिव्रता साध्वीक कथा प्रस्तुत अछि। एहि ज्ञान गरिमा ओ वैचारिक स्तरीयताक कारणेँ 'याज्ञवल्क्यस्मृति' मे धर्म संबंधी निर्णय मिथिलाक सामान्य व्यवहारमे देखबाक निर्देश अछि-धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयो मिथिला व्यवहारत:।

भारतीय दर्शनक मुख्य शाखा वा प्रकार मानल जाइत अछि। एहि छओमे सँ चारिटाक स्थापना मिथिलामे भेल अछि। कालक्रमानुसार 1000 ई. पू. सँ 600 ई. पू. क बीच मिथिलामे क्रमश: न्याय दर्शनक प्रणेता गौतम, वैशेषिक दर्शनक प्रणेता कणाद, मीमांसा दर्शनक प्रणेता जैमिनि एवं सांख्य दर्शनक प्रणेता कपिल एही प्रक्षेत्रक विभूति मानल जाइत छथि। भारतीय दर्शनक ई चारू दर्शनशाखाक प्रस्थान बिन्दु मिथिले रहल आ तेँ एकर वैदुष्य समस्त भारतीय

चिन्तनकेँ प्रेरित आ प्रभावित करैत रहल। ईशापूर्व दशम् शताब्दीसँ छठम शताब्दी धरि भारतीय वैदिक विचारधारा एवं मिथिलाक वैदुष्य प्रभावक स्वर्णकाल रहल।

ई॰ पू॰ छठम शताब्दीसँ तेसर शताब्दी ई.पू. धरि मिथिलाक वैशाली अंचल बौद्धमतक केन्द्र बनल। बौद्धमतक प्रभाव विस्तारसँ निरीश्वरवादक दिसि उन्मुखता तथा अशिक्षित ओ निम्नवर्गीय लोकक झुकावसँ वैदिक मतक पुनरस्थापनक आवश्यकता अनुभव कएल गेल। एही परिप्रेक्ष्यमे मिथिलांचल पुनः नव स्फूर्तिसँ ठाढ़ भेल। कुमारिल भट्ट, उदयनाचार्य आदि विद्वान पुनःवैदिक विचारधाराकेँ स्थापित कएलनि। इएह विचारधारा मिथिलामे दीर्घकाल धरि प्रचलित रहल। कोनो वैचारिक ओ सैद्धान्तिक परम्परा जखन दीर्घकाल व्यापी होइत अछि तँ ओहिमे व्यावहारिक स्तर पर किछु रूढ़ि, किछु कट्टरता, कौलिक वा जन्मजात प्रभाव आदि अनेक कमजोरी दुर्गुणक समावेश स्वाभाविक रूपसँ होइतैँहि अछि आ से मिथिलामे, मिथिलाक व्यवहार विशेषतः कर्मकाण्डमे सेहो भेल।

मिथिलामे नव्य न्याय, पूर्व मीमांसा एवं स्मृति निबन्ध ग्रन्थक प्रचुर रचना मध्ययुगमेँ भेल अछि। तकर सामाजिक-राजनैतिक पृष्ठभूमि छल। तेँ मध्ययुगमे एतेक स्मृति ग्रन्थक प्रचुरता दृष्टिगोचर होइछ। मिथिला प्राचीनकालसँ अबैत अपन प्रगाढ़ विद्या-परम्पराकेँ सावधानीपूर्वक रक्षा करबामे तत्पर रहल। एही तत्परताक उदाहरण अछि-'शरयन्त्र' अथवा 'शलाका परीक्षा'। ई एकटा प्रथा बनि गेल जाहिसँ अध्ययन ओ शास्त्र चिन्तन प्रथाक रूपमे प्रचलित रहल। एकरे अन्तर्गत उपाध्याय, महोपाध्याय एवं महामहोपाध्याय कहेबाक कठोर परम्परा चलल। एकर विस्तृत चर्चा महामहोपाध्याय डा. सर गंगानाथ झा आर्या सप्तशतीक विशेष संस्करणक प्राक्कथनमे केने छथि। परम्परागत विद्याक अनुशीलनसँ ओकर व्यवहारिक अनुपालनक परिणामस्वरूप मिथिलाक जनजीवन पर स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होइछ। डा. जयकान्त मिश्र जर्नल ऑफ बिहार रिसर्च सोसाइटीक खण्ड-33मे प्रकाशित अपन 'सम आस्पेक्ट्स ऑफ मैथिल कल्चर' नामक आलेखमे मिथिलाक अनेक स्थान सभक नाम संस्कृत विद्याक अध्ययनक स्मरण करबैत अछि। मिथिला मिहिरक 1935क मिथिलांकमे तँ एतेक धरि कहल गेल जे एहि ठामक खेलकूद धरिमे वेदान्तक शिक्षाक समावेश अछि। ऐतिहासिक दृष्टिसँ मिथिला सहित सम्पूर्ण भारतवर्षमे प्राचीन कालसँ अबैत 'अर्थशास्त्र' तथा 'दण्ड नीति'क परम्परा एगारहम शताब्दी धरि क्षीण होमए लागल। एहने स्थितिमे ऊपर चर्चित धर्मशास्त्र ओ कर्मकाण्डक वर्चस्व बढ़ए लागल। राजतंत्र विषयक विवेचन सेहो आब धर्मशास्त्रेक आधार पर प्रारंभ भेल। एगारहम शताब्दीमे भारत आएल विदेशी पर्यटक अलबरुनी सेहो एहि संक्रमणकालीन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति एवं उद्भूत विचार-व्यवहारक चर्चा केने छथि।

चौदहम शताब्दीमे चण्डेश्वर ठाकुर जे स्वयं प्रख्यात विद्वान राजपुरुष छलाह, 'राजनीति रत्नाकर' मे राज्य संचालनक नव व्यवस्था तथा नव कर्त्तव्यबोध स्थापित करबाक चेष्टा केलनि अछि। ओ कहलनि-राजा वैह जे प्रजाक रक्षा करथि। कोनो जाति-वर्णक भए सकैछ।

मिथिलामे जाति-वर्णक कट्टरताक असरि सामान्य जन पर सेहो पड़ल। फलतः विभिन्न जातिवर्णक लोकमे अपन प्रधान बनेबाक प्रक्रिया सेहो प्रारंभ भेल। विभिन्न लोकगाथामे जाहि नायक सभक वीरगाथा अछि से अधिकांश विभिन्न ब्राह्मणेतर जातिक अगुआक रूपमे मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रमे सक्रिय रहलाह। डा. हेतुकर झा मिथिलाक अपन समाजशास्त्रीय अध्ययन संबंधी एक आलेखमे चर्चा केलनि अछि जे गढ़सभक अवशेष विभिन्न जाति वर्णक प्रधान लोकनि मिथिलामे भेटैत अछि यथा-परगनाहाटी तथा परगना जरैलमे राजा कटेश्वरीक गढ़, परगना चखनीमे राजा गंधकेर गढ़ीक अवशेष, परगना हावीमे दुसाध राजाक गढ़क खंडहर आदि। मिथिला-तत्व विमर्शमे सेहो एहन अनेक गढ़-गढ़की अवशेषक चर्चा अछि। अस्तु।

भारतीय दर्शनक अन्तिम मौलिक कृति-'तत्व चिन्तामणि' मे गंगेश उपाध्याय (चौदहम शताब्दी) अनेक पक्षकेँ उजागर केने छथि। सामाजिक चिन्तनकेँ नव दिशाबोध देने छथि। एहि पुस्तकक विषयसँ कालक्रमे मिथिले नहि सम्पूर्ण देशक बौद्धिक जगत आन्दोलित भेल।

एही शताब्दीमे महाकवि विद्यापतिक आविर्भाव राजनैतिक, सामाजिक, भाषिक ओ साहित्यिक क्षेत्रमे विशेष प्रभाव स्थापित केलक। विद्यापति अपन 'पुरुष परीक्षा' मे नीति शास्त्र, शस्त्र, विविध व्यावहारिक पक्षादिक उदारतापूर्वक चर्चा केलनि अछि। विद्यापति हिन्दूधर्मक व्याख्या जाति-वर्गसँ ऊपर उठि क' केलनि। सभकेँ अपन कुलपरम्पराक निर्वाहक प्रेरणा देलनि, सामान्य सामाजिक धर्मक अनुपालनक संदेश देलनि। भाषाक संबंधमे सेहो-'सक्कय वानी बहुअ न भाबए' कहि 'देसिल बअना सवजन मिट्ठा' क समादर केलनि जाहिसँ ओ अमरता पाबि अद्यावधि प्रेरणा-पुरुष बनल छथि।

तत्पश्चात् टीकाकार युग आएल। गुरु-शिष्यक बीच लिखित वाद-विवादक परम्परा चलल। एहि सँ अत्यन्त महत्वपूर्ण, स्वस्थ एवं सजीव-सक्रिय बौद्धिक वातावरणक सृजन भेल। सतरहम शताब्दी अबैत-अबैत इहो परम्परा विलीन भए गेल। मिथिलाक बौद्धिक गरिमाक तेज क्षीण भए गेल। जाहि मिथिलामे पहिने शताधिक मीमांसक छलाह उन्नैसम शताब्दीक अन्तधरि मात्र तीन टा देखल जा सकैछ।

ओना गंगेश, वर्धमान, अयाची आदिक परिचयमे ओहि समयक लेखादिमे मैथिल अस्मिताक चर्चा अछि जातिवादी आ वर्णवादी भावना नहि अछि। कोनो समयमे अपनाओल गेल सामाजिक परम्पराक रक्षात्मक दृष्टिसँ धर्मशास्त्री चिन्तन आब अठारहम शताब्दी अबैत-अबैत अपनहिमे जाति-वर्णक, विशेषतः जातिगत व्यवहारक आन्तरिक विभेदक कारण बनि गेल। मिथिलामे ई सामाजिक व्यवहारक विभेद सांस्कृतिक चेतनाक व्यापकता ओ अस्मिताबोधक सूत्रकेँ सेहो प्रभावित केलक अछि। धार्मिक चिन्तन ओ जीवनक दृष्टिसँ मिथिलामे कहियो साम्प्रदायिकता नहि रहल। कोनो पन्थ वा सम्प्रदाय मिथिलामे आधिपत्य नहि जमा सकल। सामान्यतः एतए चारू वर्णमे वर्णाश्रम धर्मक अनुपालन, सभ देवी-देवताक प्रति भक्ति ओ श्रद्धा रहल अछि। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, त्रिदेवक आराधना, शक्तिक उपासनास्वरूप भगवतीक अर्चना समान रूपसँ होइत रहल। प्रत्येक घरमे गोसाउनिक स्थापना,

प्रत्येक गाममे गहवर आदि लोकदेवताक स्थापना ओ आराधना निर्बाध ओ सहज रूपेँ चलैत रहल अछि। हँ, एतए सहज रूपेँ शिवाराधनाक प्रचलन व्यापक रूपेँ रहल अछि तेँ 'महेशवानी' ओ 'नचारी' विशेष प्रिय रहल अछि सामान्य जनक मनोभावनाक अनुकूलताक कारणेँ। शक्तिक प्रति लगाव तेँ एही बात सँ स्पष्ट अछि जे प्रत्येक शुभ कार्यक प्रारंभ 'गोसाउनिक गीते' सँ होइत अछि। मुसलमानक आगम ओ एतय निवसित भेलाक पश्चात् मिथिलांचलमे दुनू समुदायक बीच सौहादपूर्ण व्यवहार रहल अछि। एतेक धरि जे अनेक धार्मिक आयोजनो मे दुनूक सहभागिता देखल जाइछ।

बारहम तेरहम शताब्दीसँ पञ्जी प्रबन्धक प्रभाव समाजक ब्राह्मण ओ कायस्थ जातिक पूर्ण रूपेँ विद्यमान रहल। प्रारंभमे तेँ ई सामाजिक जीवनकेँ नियंत्रित करबामे सहायक भेल किन्तु पश्चात् कृत्रिम रूपेँ उच्च-निम्न श्रेणीक अवधारणा सामाजिक विभेदक कारण बनल। पुनः एहू श्रेणी संबंधी निर्णयक अधिकार जखन राजसत्तामे चल गेल तेँ एकरा तोड़बाक प्रक्रिया ओ क्रम तीव्रतर भए गेल जे आई अपन अनेक लघुसीमाक कारणेँ महत्वहीन भए गेल अछि।

मिथिलामे संगीत प्रियताक कारणेँ संगीतप्रेमक विद्यमानता सदैव परिलक्षित रहल अछि। चर्यागीतसँ लए, (बारहम शताब्दीक) महाराज नान्यदेव द्वारा रचित ग्रंथ सरस्वती हृदयालंकार हार, गीत गोविन्द, वर्णरत्नाकरमे संगीत-राग आदिक चर्चा, जगद्धरक संगीत सर्वस्व, लोचनक रागतरंगिणी आदिक संगीत विषयक सैद्धान्तिक ओ व्यावहारिक ग्रन्थक रचना लोकक अभिरुचि प्रदर्शित करैत छथि। तेँ संगीतप्रियता हमर सांस्कृतिक चेतनाक अभिन्न अंग कहल जा सकैछ। तहिना नाटकक प्रति सेहो विशेष अभिरुचि रहल अछि। विभिन्न प्रकारक लोकनाट्यक समाजमे प्रचलन ई सिद्ध करैछ जे सामान्यजन, जे कलाक विशेषज्ञ-मर्मज्ञ नहि अछि तकरो एकरा प्रति प्रेम रहलैक। मिथिला ओ मैथिलीक समस्त मध्यकालकेँ नेपालीय नाटक, कीर्तनिया नाटक ओ अंकीया नाट, नाटके युग कहल गेल अछि। जे परम्परा अद्यावधि न्यूनाधिक रूपमे विद्यमान अछि।

आतिथ्य ओ स्वाभिमान हमरा सभक परिचिति रहल अछि। आतिथ्य ओ भोजनप्रियताक प्रमाण ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरमे दही, पक्वान्न अथवा अन्य सामग्रीक विशद वर्णनसँ सिद्ध अछि जे हमरा लोकनिक सामान्य स्वभावक परिचायक अछि। स्वाभिमानक विषयमे तेँ समस्त देशमे धारणा रहल अछि-''मैथिलाः स्वभावात् गुण गर्विणः भवन्ति''। शास्त्रज्ञ छी, व्यावहारिक छी तेँ तकर गुणसँ गौरवान्वित सेहो छी। अकारण नहि।

मिथिलाक संस्कृतिमे 'लोक' एवं 'वेद' केँ समान महत्व देल गेल अछि। वैदिक विचारक संग-संग लोकाचारक महत्व समान रूपेँ रहल अछि। एतेक धरि जे कोनो पूर्व परिचितसँ भेट हम सब स्वतः पूछैत छी-लोक-वेदक हाल कहू। लोक शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थमे ग्रहीत रहल अछि-सामान्य जनक बोधक रहल अछि।

समस्त जनसमुदाय, जनसामान्य, समाजक वृहत वर्ग 'लोक' शब्दक अन्तर्गत सन्निहित रहल अर्थात् लोक शब्द समस्त समुदायक बोधक रहल अछि। तेँ 'लोक-वेद'क अर्थ समाज ओ शास्त्र रूपमे प्रचलित-व्यवहृत रहल। लोक सामाजिकता सूचक रहल आ वेद आध्यात्मिक उन्नयनक जिज्ञासा सूचक। एहि एकमात्र सामान्य औपचारिकतामे भौतिक ओ आध्यात्मिक दुनू तत्वक सहज समावेश हमर सांस्कृतिक वैशिष्ट्यक परिचायक बनल अछि। चिन्तनक

स्तरीयताक द्योतक बनल अछि। हमर अस्मिताक विशेष बात इएह चिन्तनक उच्च स्तरीयताक थिक। मिथिला ओ मैथिल संस्कृतिक प्राचीनता, अनवरतता वा एकर सनातनता, कालक्रमानुसार परिवर्तनशीलता आदिकेँ अधुनातनताक दृष्टिसँ जखन देखैत छी तँ तुलनात्मक दृष्टिएँ गौरवबोध होएब स्वाभाविक। एमहर अर्थात् बीसम् शताब्दीक अन्त ओ एकैसम शताब्दीक प्रारंभिक दशकमे प्रत्येक क्षेत्रमे भूमण्डलीकरण, भौतिकवाद, बाजारवाद नव राजनीति-दार्शनिक अवधारणाक फलस्वरूप मिंथिलांचलक जनजीवन ओ समाज-व्यवस्था सेहो अवश्य प्रभावित भेल अछि। विकासोन्मुख समाजक लेल ई सहज स्वाभाविक अछि।

आई समस्त संसारमे मिथिलाक लोक विभिन्न उद्देश्यसँ देशक विभिन्न क्षेत्रमे, विदेशोमे पसरल छथि-किछु अल्पकालीन वासी बनि तथा किछु ओही ठामक निवासी बनि गेल छथि।

एतबा होइतहुँ मिथिलावासी सर्वत्र अपन अस्मिताक अनुपालन ओ रक्षार्थ तत्पर छथि। भाषा ओ साहित्यक माध्यमे 'विद्यापति' प्रतीक-पुरुष रूपमे स्थापित भए गेल छथि। ओही नाम पर अपन सांस्कृतिक अस्मिताक रक्षार्थ लोक सक्रियतापूर्वक संलग्न अछि। छोटसँ छोट शहर अथवा पैघसँ पैघ नगरे नहि, इंगलैंड, अमरीका, रूस सहित आनो देशमे मैथिलीभाषी लोकनि विभिन्न आयोजनक माध्यमे एकत्रित भए अनुचिन्तन करैत छथि, जे स्तुत्य ओ श्लाघनीय अछि।

उदार भावना थिक सभ धर्मक प्रति श्रद्धापूर्ण आदरभाव। जाति, वर्ण, सम्प्रदायसँ निरपेक्ष भए समस्त समाज, राष्ट्र आ सम्पूर्ण मानव कल्याण भावनाक रक्षा हमर अस्मिताक पचियक हेबाक चाही।

वास्तवमे संस्कृति हृदयक वस्तु थिक। वाह्य व्यवहारसँ भिन्न वस्तु थिक। वाह्या व्यवहारमे उदारता ओ स्थानिकता राखब अपेक्षित नहि आवश्यको अछि। वस्त्रादि पहिरब सामयिक ओ स्थानिक अपेक्षा रखैत अछि। किन्तु अपन सांस्कृतिक अस्मिताक प्रति सचेत रहब आवश्यक अछि। ई बात कोनो कानून वा नियमसँ संभव नहि भए सकैछ। ई तँ स्व-नियमन द्वारा संभव भए सकैछ। हम स्वयं अपन अस्मिताक प्रति जागरूक रही। स्वविवेकक अनुशरण करैत आत्मसम्मानक भावसँ पूरित रही। स्वयं जागी, जागल रही ओ सभकेँ एहि जागृतिक परिधिमे लाबी।

शब्दार्थ

तत्पश्चात-तकर बाद

दृष्टिगोचर-देखबा योग्य

कानन-बन, जंगल

तीरभुक्ति-मिथिलाक एक दोसर नाम

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) मिथिलाक प्राचीनता: वर्त्तमान अस्मिता निबन्धक लेखक छथि?

(क) डॉ0 नवीन चन्द्र मिश्र (ख) डॉ0 इन्द्रकान्त झा (ग) डॉ0 बासुकीनाथ झा (ग) डॉ0 लेखनाथ मिश्र

2. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) मिथिलाक कोनो दू प्राचीन विद्वानक नाम लिखू।

(ii) गुप्तकालमे मिथिल कोन नामसँ प्रसिद्ध छल?

(iii) भारतीय दर्शनक कतेक शाखा अछि?

(iv) तत्वचिन्तामणिक लेखक के थिकाह?

3. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) भारतीय दर्शन भंडारकेँ के सभ भरलनि?

(ii) चण्डेश्वर राज्य संचालनक विषयमे की सभ कहलनि?

(iii) लोक गाथाक नायक के सभ होइत अछि?

(iv) मैथिलक की वैशिष्ट्य अछि?

(v) हमर सभक परिचित कथीमे रहल अछि?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) तिरहुतक उत्पत्तिक विश्लेषण करू।

(ii) मिथिलाक प्राचीनताक वर्णन करू।

(iii) मिथिलाक प्राचीनता वर्त्तमान अस्मिताक अति संक्षेपमे विशेषता लिखू।